जगन्नाथ संस्कृति (जगन्नाथपुरी मंदिर) से कलियुग के अंत के संकेत

''पेजनला फुटी तोर पडिब बिजुली, से जुगे जिब की प्रभु नीलाचल छाड़ि।''

अर्थात : जब श्रीजगन्नाथ मंदिर के रसोई घर पर बिजली गिरेगी, तब कलियुग समाप्त हो जाएगा और श्रीजगन्नाथ नीलांचल को छोड़कर मानव रूप धारण करेंगे। पिछले दिनों श्रीजगन्नाथ मंदिर की रसोई घर पर बिजली गिरी थी और इसका प्रमाण पहले ही दिया जा चुका है। इससे यह माना जा सकता है कि श्रीजगन्नाथ जी नीलांचल को छोड़कर मानव शरीर धारण कर चुके हैं।

''से बट मुलरे अर्जुन जेहु बसिब दंडे, मृत्यु समये न पड़िब यम राजर दंडे।
से बट मोहर बिग्रह जंहु हेले आघात, मोते बड़ बाधा लागई सुण मघबासूत।
से बट रु खंडे बकल जेहु देब छड़ाई, मोहर चर्म छडाइला परि ज्ञांत हुअइ।''

अर्थात : श्रीमंदिर के अंदर स्थित कल्पवट भगवान के विग्रह के समान है। कल्पवट की तुलना भगवान के शरीर से की गई है। कल्पवट से कोई छोटा सा टुकड़ा भी तोड़ ले तो भगवान के शरीर को बहुत कष्ट होता है। अत: आज विचारणीय विषय है कि कल्पवट की शाखा बार-बार टूट रही है, इसका अर्थ है कि महापुरुष की रचना के अनुसार यदि कल्पवट की शाखा टूट जाती है, तो भगवान नीलांचल को छोड़कर मनुष्य का शरीर ग्रहण कर चुके हैं और महापुरुष अच्युतानंद ने इसी विषय में लिखा है कि -

''कल्पबट घात हेब जेतेबेले नीलाचल छाड़ि जिबे मदन गोपाले।
कल्पबट शाखा छिड़ि पड़िब से काले, नाना अकर्म मान हेब क्षेत्रबरे।
रूद्र ठारु उनविंश पर्यन्त सेठारे, स्थापना होइबे मोर सेवादी भाबरे।
बड़ देउलरे मुंही नरहिबी बीर, बाहार होइबि देखि नर अत्याचार।''

अर्थात : महापुरूष अच्युतानंद जी ने उपरोक्त पंक्तियों में उल्लेख किया है कि जब कल्पवट की शाखा टूटेगी तो मेरे क्षेत्र में बहुत अन्याय, अनीति, अनुशासनहीनता और अराजकता फैल जाएगी। भगवान कल्कि की आयु जब 11 से 19 वर्ष के बीच होगी तब सरकार द्वारा श्रीमंदिर का दायित्व संभालने के लिए नये सेवक रखे जाएंगे। इस समय भगवान श्रीजगन्नाथ मनुष्यों के अत्याचार को देखकर मंदिर त्यागकर मानव शरीर ग्रहण कर चुके होंगे। मालिका की बात आज सच हो गई है। पुन: महात्मा अच्युतानंदजी ने इस स्थिति का वर्णन करते हुए लिखा है कि -

''बड़ देऊलु मोहर पत्थर ख़सिब, गृध्र पक्षी नील चक्र उपरे बसिब।
दिने दिने चलुरे मु न होइबि दृश्य, भोग सबु पोता हेब जान पाण्डु शिष्य।
समुद्र जुआर माड़ि आसीब निकटे, रक्ष्या नकरिबे केहि प्राणींकु संकटे।''

अर्थात : महापुरुष ने फिर वर्णन किया कि जब गिद्ध पक्षी नीलचक्र पर बैठते हैं तब श्री जगन्नाथ के श्री मंदिर से बारम्बार पत्थर गिरता हैं। उस समय महाप्रसाद के अर्पण में महाप्रभु जगन्नाथ दर्शन नहीं देंगे। ऐसा बार-बार होने पर महाप्रसाद को कई बार मिट्टी के नीचे दबा दिया जाएगा। इससे ये प्रमाण मिलता है कि श्रीजगन्नाथ जी की मंदिर की परंपरा के अनुसार भगवान जगन्नाथ को जब महाप्रसाद अर्पित किया जाता है, तब महाप्रभु जगन्नाथजी, महाप्रसाद अर्पण करने वाले मुख्य पुजारी को दर्शन देते हैं। किन्तु महापुरूष अच्युतानंदजी की वाणी के अनुसार, जब गिद्ध पक्षी या बाज पक्षी नीलचक्र पर बैठता है, उस समय भगवान के श्रीमंदिर से पत्थर गिरेगा और श्रीजगन्नाथ महाप्रभु के महाप्रसाद अर्पण विधि के समय मुख्य पुजारी को दर्शन नही देंगे। और इस समय महाप्रभु का महाप्रसाद मिट्टी में दबा दिया जाएगा। महापुरुष अच्युतानंदजी ने इसका उल्लेख एक चेतावनी के रूप में किया कि इस समय, समुद्र में बार-बार तूफान आएगा और समुद्र का जलस्तर बहुत ऊपर उठेगा और पृथ्वी पर बाढ़ आएगी। जो आज धरती पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। यह संकेत जगन्नाथ क्षेत्र में बार-बार मिला है, और उसके बाद बड़े बड़े संकट आने वाले हैं। इसलिए उन्होंने एक सहृदय संत होने के नाते लोगों में मानसिक परिवर्तन हो और वे वैष्णव धर्म एवं ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पित हों और अभक्ष्य भक्षण समेत अन्य दुर्गुणों का भी त्याग करें। इसके लिए महापुरुष ने कलियुग के मनुष्यों को सचेष्ट किया है। महापुरुष ने इस सन्दर्भ में फिर से वर्णन किया है।

॥ जय श्री माधव ॥

विश्व सनातन धर्म

कलियुग का अंत और सतयुग का प्रारंभ

विश्व सनातन धर्म

भविष्य मालिका पुराण

600 वर्ष पूर्व पंचसखाओ के द्वारा उड़िया भाषा में लिखा गया गुप्त ग्रंथ भविष्य मालिका पुराण, जिसमें खंडप्रलय, धर्मसंस्थापना, कलियुग से अनंत युग, अनंत युग से संपूर्ण सतयुग का वर्णन है, जिसका हिंदी सहित कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

परम पूज्य पंडित
श्री काशीनाथ मिश्रजी
भविष्य मालिका एवं
श्रीमद्भागवत पुराण विश्लेषक

जो लोग सतयुग में तपी (तपस्वी) थे, त्रेतायुग में कपी (वानरसेना) थे और द्वापर में गोपी थे वहीं लोग मालिका को ग्रहण करके प्रभु को प्राप्त करेंगे और कलियुग में भक्त कहलायेंगे।

श्रीमद् भागवत कथामृत और भविष्य मालिका

कलियुग अंत और सत्ययुग आगमन का महा सत्संग

कलियुग से संगम, संगम से अनंत युग, अनंत युग से संपूर्ण सत्ययुग, और ६०० वर्ष पहले लिखी हुई गुप्त ग्रंथ भविष्य मालिका में चारो युग गणना का महत्व जानिए।

१० से १६ मार्च, २०२४ शाम ४:०० से ७:०० बजे

संपर्क सुत्र : 90823 68090 9821173150

श्री श्याम सत्संग भवन, श्यामजी बापू मार्ग कांदिवली वेस्ट मेट्रो स्टेशन के पास,मुंबई.

ये मंगलमय आयोजन में आप सभी सह परिवार आमंत्रित हैं।

www.kalkiavatara.com

भविष्य मालिका पुराण के संबंध में...

जब भगवान श्री कृष्ण ने चैतन्य महाप्रभु अवतार लिया था तब उनके साथे उनके पंच सखा महापुरुष श्री अच्युतानंददासजी, श्री बलरामदासजी, श्री जगन्नाथदासजी, श्री जसवंतदासजी और श्री शिशु अनंतदासजी द्वारा आज से 600 वर्ष पूर्वे 15वी सदी में पावन उत्कल भूमि (ओडिसा राज्य) में भगवान श्री जगन्नाथजी के निर्देशन में भविष्य पुराण ग्रंथ को संशोधित करते हुए भविष्य मालिका पुराण ग्रंथ की रचना की। इस क्रम में उन्होंने उड़िया भाषा में ताड़ के पत्तों पर कुल 1,85,000 ग्रंथो की ग्रंथो की रचना की।

इस ग्रंथ में पंच सखाओने कलियुग के अंत में धर्म की स्थिति, भगवान श्री कल्किजी का अवतरण, धर्म की स्थापना, मानव समाज की मुक्ति और अनंत काल तक भगवान की लीलाओ का विस्तार से वर्णन किया गया है।

भविष्य मालिका में लिखी हर बात पत्थर की लकीर के समान है और हमेशा सच साबित हुई है। जैसे भारत में मुगलों का अत्याचार, अंग्रेजों की गुलामी, स्वतंत्रता संग्राम की घटनाएं और स्वतंत्रता सेनानियों का वर्णन, भारत देश का टूट कर आजाद होना, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, बर्मा देश का निर्माण, प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध, अज्ञात रोग महामारी का आना ये सभी घटनाएं घटित हो चुकी हैं।

और इस ग्रंथ में मुख्य रूप से भगवान श्री कल्किजी के धरा अवतरण, भक्तों का एकत्रीकरण, सुधर्मा महा-महासंघ और 16 मंडल का गठन, खंड प्रलय, अग्नि प्रलय, जल प्रलय, भूकंप, रोग महामारी एवं परमाणुविक तृतीय विश्व युद्ध से लेकर अनंत युग / आद्य सतयुग के आगमन तक का वर्णन किया गया है। भविष्य मालिका पुराण के अनुसार सन 2032 से पूर्व संपूर्ण विश्व में सभी धर्मो और पंथो का पुनर्गठन होकर सारे विश्व में केवल सनानत धर्म प्रतिष्ठित होगा।

यह ग्रंथ आने वाले महाविनाश से रक्षा पाने के लिए संपूर्ण विश्व में एक मात्र चेतावनी और एक मात्र संजीवनी है।

पंडित श्री काशीनाथ मिश्रजी के 40 वर्षो से अधिक के अध्ययन एवं अमुमोदन से, आज विश्व में पहली बार ''भविष्य मालिका पुराण ग्रंथ'' प्रथम खंड को हिंदी सहित समग्र विश्व में, 150 से अधिक देशों में भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रतिपादन किया जा रहा है। इस ग्रंथ में आने वाले महाविनाश और परिवर्तन की अधिकतम भविष्यवाणियों का शत् प्रतिशत वर्णन किया गया है। ताकि आने वाले महाविनाश से पूर्व मनुष्य समाज को चेतावनी मिल सके और मनुष्य समाज सनातन आर्य वैदिक परंपरा का अनुपालन कर इस महाविनाश से रक्षा प्राप्त कर सके।

शास्त्रो में वर्णित कलियुग के अंत के समय के लक्षण

भगवान वेद व्यासजी द्वारा रचित श्रीमद् भागवत पुराण - स्कंध-12, अध्याय-2, श्लोक-24

यदा चन्द्रश्च सूर्यश्च तथा तिष्यबृहस्पती। एकराशौ समेष्यन्ति तदा भवति तत् कृतम्॥

अर्थात : जिस समय चंद्रमा, सूर्य और बृहस्पति एक ही समय एक ही साथ पुष्य नक्षत्र के प्रथम पल में प्रवेश करके एक राशि पर आते हैं, उसी समय सत्ययुग का प्रारंभ होता है।

(यह घटना 01-08-1943, रविवार को घटित हो चुकी है। इससे हमे साफ पता चलता है की कलियुग का अंत हो गया और सतयुग की शुरूआत हो चुकी है। कलियुग के भोग को 5000 साल लगे है और उसको खतम करने में 62 साल लगेगें तथा 2032 से सत्य युग का आरंभ हो जायेगा।)

ज्यादा जनाकारी के और विडीयो देखने के लिए कोड स्केन करे।

मनु स्मृति (अध्याय 1, श्लोक 69)

चत्वार्याहुः सहस्त्राणि वर्षाणां तु कृतम् युगम्। तस्य तावच्छती संध्या संध्यांशश्च तथाविधः॥

अर्थात : चार हजार वर्ष के पश्चात सतयुग आता है। उस चार हजार वर्ष के परमायु का एक दशमाँश वर्ष का संध्या समय होता है।

गर्ग संहिता (अश्वमेघखण्डम्, श्लोक 29, अध्याय - 62)

अब्दाश्चतुःसहस्त्राणि कलौ पञ्च शतानि च। गते गिरिवरे हि श्रीनाथः प्रादुर्भविष्यति॥

अर्थात : कलियुग के 4000 वर्ष भोग होने के बाद, इसके संध्या समय के 400 वर्ष बाद, भगवान महाविष्णु (श्रीनाथ) धरती पर अवतार लेंगे और पाप के भार का अंत करेंगे।

जगन्नाथ संस्कृति (जगन्नाथपुरी मंदिर) से कलियुग के अंत के संकेत

''चुलरु पथर जेबे ख़सिब सूत , ख़सिले अंला बेढ़ा रु हेब ए कलि हत।''

अर्थात : श्रीजगन्नाथ के क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करते हुए, भविष्यमालिका ग्रंथ में महापुरुष अच्युतानंद दास जी ने भक्तों को सूचित करने के लिए लिखा है कि जब श्रीजगन्नाथ धाम के मुख्य मंदिर से पत्थर गिरेगा तब समझना कि कलियुग का अंत हो गया है महापुरुष का यह वचन अब सत्य सिद्ध हो गया है । गत दिवस 16.6.1990 को श्री मंदिर के आमला बेढ़ा से एक पत्थर गिरा था जिसकी जांच के लिए केंद्रीय बजट विभाग द्वारा एक समिति गठित की गई, किन्तु वैज्ञानिकों को आजतक पता नहीं चल पाया कि इतना बड़ा पत्थर (1 टन से अधिक) मंदिर में कहाँ से आया और कैसे गिर गया ? ये वैज्ञानिकों के लिए एक आश्चर्यजनक के घटना के साथ शोध का विषय बना हुआ है । सभी महात्माओं और ऋषियों की वाणी सत्य सिद्ध हुई है, तथा इस रूप में भक्तों के लिए संकेत था। जगन्नाथ मंदिर के भीतर आमला बेढ़ा से पत्थर का गिरना कलियुग के अंत का प्रमाण है।

''देउल रु चुन छड़िब, चक्र बक्र होइब, माहालिआ होइ भारत अंक कटाउ थिब।''

अर्थात : जब श्री जगन्नाथ जी के मुख्य मंदिर में चूने का जो लेप है उस से कुछ कुछ चूना निकल आएगा, तब श्रीजगन्नाथ मंदिर के शिखर पर लगा नीलचक्र थोड़ा टेढ़ा हो जाएगा और भारत की आर्थिक स्थिति उस समय अच्छी नहीं होगी। उपरोक्त पंक्ति से ज्ञात होता है, जब जगन्नाथ मंदिर से चूने का लेप झड़ गया था, उस समय के प्रधान मंत्री डॉ चंद्रशेखर थे और 3000 टन सोना गिरवी रख के भारत में पैसे की कमी को पूरा किया और उसके बाद भारत के प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने भारत की आर्थिक नीति में बदलाव करके आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाकर स्थिति में सुधार किया। मालिका की उपरोक्त पंक्ति से सिद्ध होता है कि महापुरूष अच्युतानंद जी ने आज से 600 वर्ष पूर्व जो कहा था कि जब जगन्नाथ मंदिर से चूना निकल जाएगा तब भारत की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होगी और वह आज सिद्ध हो चुकी है।